ISSN 0973-3914

विशेषांक
महिला सशक्तिकरण के विविध आयाम

अंक-41 (विशेषांक) वर्ष-21 अप्रैल 2025

रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइन्सेस

Peer- Reviewed Research Journal
UGC Journal No. (Old) 40942
Impact Factor 7.0 (IIFS)
Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©

आई. एस. एस. एन. 0973-3914

महिला सशक्तिकरण के विविध आयाम

विशेषांक

Peer-Reviewed Research Journal , UGC Journal No. (Old) 40942
Impact Factor 7.0 (IIFS), Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals, Directory ©, ProQuest , U.S.A. Title Id : 715205

अंक-41(विशेषांक) वर्ष-21 अप्रैल 2025

डॉ. मालती तिवारी
सम्पादक
विभागाध्यक्ष, राजनीति शास्त्र, शासकीय म.व. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महासमुन्द (छ.ग.)

डॉ. सीमारानी प्रधान
सह सम्पादक
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, शासकीय म.व. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महासमुन्द (छ.ग.)

शोध केन्द्र
राजनीति विज्ञान/हिन्दी
शासकीय महाप्रभु वल्लभाचार्य स्नातकोत्तर
महाविद्यालय महासमुंद, (छ.ग.)

सलाहकार एवं परामर्श मण्डल

डॉ. रीता पाण्डेय, विभागाध्यक्ष इतिहास, शासकीय म.व. स्नातकोत्तर महाविद्यालय महासमुन्द (छ.ग.)
डॉ. नीलम अग्रवाल, विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र, शासकीय म.व. स्नातकोत्तर महाविद्यालय महासमुन्द (छ.ग.)
डॉ. ई.पी. चेलक, विभागाध्यक्ष वनस्पति शास्त्र, शासकीय म.व. स्नातकोत्तर महाविद्यालय महासमुन्द (छ.ग.)
डॉ. सुभाष चन्द्राकर, सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, दुर्गा महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)
डॉ. महेन्द्र कुमार सार्वा, सहायक प्राध्यापक इतिहास, शासकीय दूधाधारी ब.म. स्नातकोत्तर महाविद्यालय रायपुर
डॉ. बी.एल. सोनेकर, अर्थशास्त्र अध्ययन शाला पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर(छ.ग.)
डॉ. सरस्वती वर्मा, विभागाध्यक्ष हिन्दी, शासकीय माता कर्मा कन्या महाविद्यालय महासमुन्द (छ.ग.)
डॉ. वैशाली गौतम, सहायक प्राध्यापक, मनोविज्ञान, कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय देवेन्द्रनगर, रायपुर
डॉ. जगदीश सत्यम, सहायक प्राध्यापक, भौतिक शास्त्र, शासकीय म.व. स्नातकोत्तर महाविद्यालय महासमुन्द

सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, रीवा
की मुख्य शोध पत्रिका
म.प्र. सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1973 के अंतर्गत पंजीकृत

अनुक्रमणिका

01.	वैदिक काल में नारी की स्थिति **डॉ. एस.एस. तिवारी**	09
02	प्राचीन अर्थव्यवस्था के विकास में नारी की भूमिका **डॉ. रीता पांडेय**	20
03	स्वतंत्रता आंदोलन में छत्तीसगढ़ की महिलाओं का योगदान डॉ. समीक्षा चंद्राकर	25
04	भारत में महिला सशक्तिकरण कानून और योजनाएं **डॉ. एस.एस.दीवान**	31
05	नारी की संवैधानिक स्थिति और अधिकार **डॉ. सीमा अग्रवाल**	38
06	महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए राज्य शासन की योजनाएं **डॉ. अनिता अनंत** **डॉ. मालती तिवारी**	45
07	महिलाओं के जीवन की चुनौतियाँ एवं समाधान **श्रीमती धनलक्ष्मी दीवान**	51
08	महिला सशक्तिकरण में महिला हिन्दी साहित्यकारों का योगदान **डॉ. दुर्गावती भारतीय**	58
09	रामायण काल में स्त्री उपेक्षित पात्र **सुमन साहू, डॉ. यशवंत कुमार साव**	62
10	महिला सशक्तिकरण के विविध आयाम **क्षमा शिल्पा चौहान**	66
11	भारतीय साहित्य में महिला साहित्यकारों का योगदान **डॉ. सरस्वती वर्मा**	73
12	महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध एवं निराकरण **श्रीमती तुलसी पैकरा**	77
13	सरकार के विभिन्न योजनाओं के सहारे अपने आप को आर्थिक सशक्त बनाते जनजाति समुदाय की महिलाएं **डॉ. टुपेश कोसमा, डॉ. मालती तिवारी**	84
14	अनुसूचित जाति महिलाओं की राजनीतिक स्थिति: महासमुंद जिले के विशेष संदर्भ में **विजय कुमार मिर्चे, डॉ.मालती तिवारी**	90
15	रामायण काल में नारी की स्थिति **मेनुका श्रीवास्तव** **डॉ. सियाराम शर्मा**	97

UGC Journal No. (Old) 40942,
Peer- Reviewed Research Journal
Impact Factor 7.0 (IIFS) ISSN 0973-3914
महिला सशक्तिकरण के विविध आयाम (विशेषांक), अंक 41, वर्ष 21, अप्रैल 2025

रामायण काल में स्त्री उपेक्षित पात्र

•सुमन साहू
••डॉ. यशवंत कुमार साव

सारांश- रामायण काल में मंदोदरी, शूर्पनखा, उर्मिला, तारा, अहल्या, कैकेयी जैसी स्त्री पात्रों की उपेक्षा करना अनुचित नजर आता है। इन स्त्री पात्रों का अपना स्वतंत्र अस्तित्व रहा है। जिसकी विस्तृत चर्चा की जानी चाहिए। तारा, अहल्या, मंदोदरी पतिव्रत धर्म का पालन करने वाली आदर्श स्त्री की श्रेणी में आती हैं। इसके अलावा यह रूपवती गुनी तथा विदुषी महिलाएं थी, जिन्होंने समय-समय पर अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है। यह स्त्रियां राजनीति कूटनीति पर भी गहरी समझ रखती थी। पति द्वारा अनुचित कार्य करने पर उन्हें समझाती थी। उनका मार्गदर्शन करती थी। पतियों द्वारा उनके बातों की अवहेलना कर दिए जाने पर भी तारा, मंदोदरी, अहल्या पीछे नहीं हटती, लगातार प्रयासरत रहती हैं। यह स्त्रियां शास्त्रार्थ में निपुण थी। देखा जाए तो यह पुरुषों से किसी भी मामले में कम नहीं थी। इन स्त्रियों की स्वतंत्र विचार, स्वतंत्र पहचान थी परंतु रामायण में इनकी चर्चा बहुत कम मिलती है। उर्मिला जैसी कर्तव्यनिष्ठ स्त्री को भी रामायण काल में अनदेखा किया गया है। पति वियोग में उर्मिला ने भी 14 वर्ष के वनवास का दुख भोगा है परंतु इसका जिक्र नहीं किया जाता। रामायण काल में केवल सीता के त्याग और समर्पण को बताया जाता है। गुप्त के 'साकेत' में सीता स्वयं उर्मिला से कहती है, जो भाग्य मेरा है वह तेरा ना हो सका। इससे स्पष्ट है कि रामायण काल में कुछ ही स्त्री को प्रमुखता देकर अन्य प्रमुख स्त्री पात्र की उपेक्षा की गई है। रामायण काल में सीता के अलावा अन्य स्त्री पात्रों का भी अपना अलग महत्व है जो समाज में अपना आदर्श छवि प्रस्तुत करते नजर आती हैं। साहित्य में उनके जीवन की घटनाओं को, उनके चारित्रिक विशेषताओं को पाठकों के समक्ष रखा जाना चाहिए।

मुख्य शब्द- उपेक्षित स्त्री पात्र, मंदोदरी, शूर्पनखा, उर्मिला, तारा, अहल्या, कैकेयी, मर्यादा, स्वतंत्र अस्तित्व।

रामायण काल में स्त्री उपेक्षित पात्रों को लेकर पहले भी कई आलेख, उपन्यास या काव्य रचित किए गए हैं ताकि रामायण काल में ऐसी उपेक्षित स्त्री पात्रों के अस्तित्व

• शोधार्थी, शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई (छ. ग.)
•• शोध निर्देशक, शासकीय मदनलाल साहू महाविद्यालय अरमरीकला बालोद (छ. ग.)

को उजागर किया जा सके। रामायण काल में कुछ स्त्री पात्रों का उल्लेख केवल नाम मात्र किया गया है जैसे– मंदोदरी, शूर्पनखा, उर्मिला, तारा, अहल्या, कैकेयी, जिनका रामायण काल में विशेष महत्व रहा है। साहित्यकारों द्वारा रामायण में नारी पात्रों में मुख्य रूप से सीता को ही प्रमुख पात्र के रूप में रखा गया है। रामायण में राम नायक के रूप में और सीता नायिका के रूप में चित्रित की गई है। सीता के अलावा रामायण में अन्य स्त्री पात्रों को सहायक माना गया है। रामायण में उन स्त्री पात्रों के चरित्र या उनके अस्तित्व को नजरअंदाज किया गया है। आधुनिक साहित्यकारों द्वारा सीता की पवित्रता, उसके आदर्श, उसकी मर्यादित आचरण को लेकर ज्यादातर बातें की गई हैं। समाज में स्त्रियों को सीता के चरित्र को अपनाने की सीख दी जाती है। सीता जैसी आदर्श पत्नी, पुत्रवधू, मां, बहन व मर्यादित आचरण करने वाली स्त्री समाज में पूजनीय मानी जाती है। सीता के अलावा अन्य स्त्री पात्रों के स्वतंत्र अस्तित्व व उनके आदर्शवादी विचारों की रामायण में उदासीनता देखने को मिलती है। कैकेयी, उर्मिला, मंदोदरी, शूर्पनखा, तारा, अहल्या की भी रामायण में उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है जितनी सीता की रही है। साहित्य में इन स्त्री पात्रों का उल्लेख न करना अन्याय होगा। जिस प्रकार नाटक, कहानी या फिल्मों में मुख्य पात्रों के साथ सहायक पात्र को भी रखा जाता है ताकि वह नाटक, कहानी, फिल्म अधिक प्रभावी व रोचक बन सके; उसी प्रकार रामायण की रोचकता का कारण सीता के अलावा अन्य स्त्री पात्रों की मौजूदगी है। इनके बिना रामायण अधूरा व अपूर्ण प्रतीत होता है। आगे हम इन्हीं उपेक्षित महिला पात्रों की चर्चा करेंगे–

1. उर्मिला- उर्मिला जनक की पुत्री, सीता की छोटी बहन है। रामायण में उर्मिला का वर्णन लक्ष्मण की पत्नी के रूप में किया गया है। उर्मिला रामायण में उपेक्षित स्त्री पात्र है। उर्मिला के सहनशीलता, त्याग, समर्पण का जिक्र रामायण काल में नहीं मिलता। उर्मिला के उपेक्षा को लेकर साहित्य जगत में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' को लेकर लेख लिखा। उर्मिला के त्याग को लेकर महावीर प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं– "उसने अपने सांसारिक सुख के सबसे अच्छे अंश से हाथ धो डाला। जो सुख विवाहोत्तर उसे मिलता उसकी बराबरी 14 वर्ष पति वियोग के बाद का सुख कभी नहीं कर सकता।"[1] इस प्रकार द्विवेदी जी उर्मिला के समर्पण को बतलाते हैं जिसकी अपेक्षा आदि कवियों द्वारा की गई है। साहित्य में राष्ट्रीय कवि कहे जाने वाले मैथिलीशरण गुप्त ने भी उर्मिला की उपेक्षा को लेकर 'साकेत' महाकाव्य रचित किया। यह महाकाव्य उर्मिला को आधार बनाकर लिखा गया है। साकेत में उर्मिला को कर्तव्यनिष्ठ, त्यागमयी, साहसी व कला में निपुण स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है। महाकाव्य को लेकर उर्मिला के विषय में यह बात कही गई– "महाकाव्य ने उर्मिला को महत्व नहीं दिया ये उनका अन्याय नहीं, मर्यादा थी परंतु उर्मिला के चरित्र की शक्ति ही है कि उसने लोक के मन को झकझोर अपनी प्रतिष्ठा को अर्जित किया।"[2] उर्मिला की श्रेष्ठता, उसका अस्तित्व रामायण में अछूता दिखाई देता है।

2.मंदोदरी - मंदोदरी मायासुर व अप्सरा हेमा की पुत्री थी। रूप व गुण में मंदोदरी श्रेष्ठ मानी जाती थी। रावण ने अपने छल विद्या का प्रयोग करते हुए मंदोदरी से विवाह कर लिया। रावण के इस धोखे के बावजूद मंदोदरी ने अपने पत्नी धर्म को निभाया। रावण

अहंकारी होकर स्वयं को सर्वशक्तिमान समझता है और बदले की भावना में सीता का हरण कर लेता है तब मंदोदरी उससे कहती है– "आप स्वेच्छा से किसी जोड़े को अलग नहीं करेंगे, विरह अग्नि में किसी को तड़पने नहीं देंगे, इसकी सौगंध आप खा सकते हैं?"[3] मंदोदरी समझदार, न्यायप्रिय व दूरदृष्टि रखने वाली स्त्री थी। जिसकी रामायणकाल में उपेक्षा की गई है। मंदोदरी एक विदुषी महिला थी। वह पतिव्रता स्त्री थी जो रावण द्वारा किए जाने वाले अनुचित कार्य पर रोक लगाती है। मंदोदरी अपने पति को सन्मार्ग में चलने की प्रेरणा देती है किंतु रावण की क्रूरता व अहंकारी प्रवृत्ति को नहीं बदल पाती। वह कहती है– "मैंने अपने पति की क्रूरता कम करने, उन्हें अत्याचारी होने से बचाने और सीता को छोड़ देने के लिए समझाने–बुझाने के अथक प्रयास किए। यह अवश्य है कि मुझे पति प्रबोधन के अभियान में पूर्ण सफलता नहीं मिली, पर प्रयास तो प्रयास है।"[4] इस प्रकार देखा जा सकता है कि रामायण काल में मंदोदरी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

3.अहल्या - अहल्या मुदगल ऋषि और मेनका की सुपुत्री थी। अहल्या स्वर्गलोक की अप्सरा मेनका की सुपुत्री होने के कारण अत्यंत सुंदर थी। अहल्या का विवाह गौतम ऋषि से हुआ। अहल्या अपने पति के प्रति ईमानदार व वफादार थी। वह अपने पति पर पूर्ण निष्ठा रखती थी। वह अपने पति को ही अपना संसार मानकर जीवन जीती थी। अहल्या कहती है– "विवाह के पूर्व ही मैंने यह निर्णय लिया था कि अपने संगी–साथियों, गुरुजनों यहां तक मां से भी ऊपर अपने पति की इच्छाओं पर अधिक ध्यान दूंगी।"[5] अहल्या के सौंदर्य पर मोहित होकर इंद्र द्वारा गौतम ऋषि का वेश बनाकर अहल्या पर बलात किया गया। अहल्या को जब इंद्र के छल का पता चलता है तो वह कहती है– "मैंने आंखें खोली। वे महर्षि नहीं थे। वह मुखड़ा भी परिचित था। वह इंद्र था। मेरे शरीर से प्राण निकल गये। चेतना समाप्त हो गई। उस क्षण जड़ हो गए और मन और शरीर दोनों।"[6] गौतम ऋषि द्वारा बिना अहल्या की बात सुने क्रोध में पत्थर बन जाने का श्राप दे दिया जाता है। रामायण कथा में अहल्या जैसी पीड़ित स्त्री पात्र की उपेक्षा की गई है। अहल्या इंद्र जैसे वैभववान शासक के छद्म रूप का शिकार हो बैठी। अहल्या की बातों पर उसके पति द्वारा विश्वास न कर सजा सुना दी जाती है। यहां पितृसत्तात्मक शासन व्यवस्था नजर आती है। जहां पुरुष अपने अहम व क्रोध में स्त्री की बात पर यकीन ना करके उसे ही चरित्रहीन समझ बैठता है।

4.तारा - तारा रामायण काल में उपेक्षित स्त्री पात्र रही है। तारा का विवाह किष्किंधा के राजा बाली से हुआ। तारा विदुषी स्त्री थी। उसे राजनीति कूटनीति का भी बखूबी ज्ञान था। तारा समय–समय पर अपने पति बाली को सलाह देती है किंतु बाली तारा की बातों को कोई विशेष महत्व नहीं देता। तारा रामायण काल में विशेष स्थान रखती है। तारा में सोचने समझने और सही निर्णय लेने की क्षमता थी। पति बाली द्वारा तारा की बात ना सुने जाने पर वह राम के हाथों मारा जाता है। तारा इस बात से बहुत आहत होती है। तारा एक पतिव्रता स्त्री थी। वह पति की सुरक्षा को अपना दायित्व समझती है इसलिए उसे हर समय सावधान करती है। तारा पुरुषों से सवाल करती है– "यह कौन सा पुरुषार्थ है जिसमें निजी शत्रुता की भेंट महिलाएं चढ़ती है।"[7] तारा सूझ–बूझ से काम करने वाली एक बुद्धिमान स्त्री थी। रामायण काल में समय–समय पर उसने अपने साहस व निडरता का परिचय दिया है।

5.शूर्पनखा - रामायण काल में शूर्पनखा भी उपेक्षित पात्र रही है। शूर्पनखा लंकेश्वर रावण की बहन थी। शूर्पनखा को रामायण में निकृष्ट पात्र के रूप में चित्रित किया गया है। शूर्पनखा सुंदर थी। उसका मन राम पर आ जाता है और वह अपने प्रेम की स्वतंत्र अभिव्यक्ति राम से करती है। राम द्वारा उसके प्रेम विनय को ठुकरा दिया जाता है। लक्ष्मण क्रोधित अवस्था में उसके नाक काट देता है। शूर्पनखा राम के मर्यादा पर सवाल उठाती है। किसी स्त्री को प्रेम की स्वतंत्रता क्यूं नहीं है? ऐसा करने पर उसे दंडित करना कहां तक उचित है? बेझिझक व बेबाकी से अपनी बात रखना जानती थी। ऐसी स्त्री पात्र को रामायण में घृणित बताकर उसकी उपेक्षा की गई है।

6.कैकेयी - कैकेयी कैकेय देश की सुन्दर, स्वाभिमानी राजकुमारी थी। कैकयी का विवाह 16 वर्ष की उम्र में 60 वर्षीय राजा दशरथ से हुआ। कैकेयी अपने साहस और वीरता का परिचय दशरथ के साथ रणभूमि में देती है। जहां कैकयी बड़ी बुद्धिमानी से राजा दशरथ के प्राण बचाती है तथा युद्ध में विजय दिलवाती है। कैकेयी राजा दशरथ की तीसरी पत्नी थी जो राजा को अत्यधिक प्रिय थी। रानी कैकयी ने पुत्र मोह में दो वरदान राजा से मांगे। वह न्याय संगत ना होने के कारण कैकयी को रामायण में खलनायिका के रूप में देखा गया। कैकेयी नाम से सब नफरत करने लगे। यह कहा गया कि कैकेयी ने सत्ता के लालच में छल, प्रपंच रचे। कैकेयी पुरुष प्रधान समाज में अपना वर्चस्व कायम करना चाहती थी जिसे कैकेयी की निकृष्ट प्रवृत्ति माना गया।

निष्कर्ष - निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि रामायण काल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली स्त्री पात्रों की उपेक्षा की गई। जो स्त्रियां अपने स्वतंत्र अधिकार, स्वतंत्र अस्तित्व व स्वाधीनता को महत्व देती थीं, ऐसी स्त्री पात्र रामायण काल में तिरस्कृत कर दी गईं। तारा, मंदोदरी, उर्मिला, अहल्या जैसी स्त्री पात्र समाज के लिए एक आदर्श रूप प्रस्तुत करती हैं। रामायण में इन स्त्री पात्रों को लेकर विस्तृत चर्चा नहीं की गई। रामायण काल में इनके केवल नामों का उल्लेख देखने को मिलता है। अत: यह कहना उचित जान पड़ता है कि रामायण काल में इन स्त्री पात्रों को उपेक्षित किया गया है।

संदर्भ सूची-

1. https://www.hindwi.org/essay/kawiyon-ki-urmila-wishayak-udasinata-mahavir-prasad-dwivedi- essay
2. ttps://www.facebook.com/photo.php?fbid=2739837692919731&set=a1823902464513263
3. परितप्त लंकेश्वरी, मृदुला सिन्हा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृ.18
4. वही पृ.122
5. अहल्या उवाच, मृदुला सिन्हा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृ.72
6. वही, पृ.162
7. https://www.aajtak.in/litrature/review/story/review-of-vanara-the-legend-of-sugreeva-and-tara-a-anand-neelakantan-novel-670231-2019-07-23